E-ISSN: 2582-9769

रजनीगंधा फूल की व्यवसायिक खेती

[1] राजकुमार जाखड़ [2] चंद्रकान्ता जाखड़ [3] योगेंद्र मीणा एवं [4] मंजू नेटवाल

[1,3] विद्यावाचस्पति छात्र, उद्यान विज्ञान विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

[2] स्नाकोत्तर छात्रा, शस्य विज्ञान विभाग, श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर

[4] विद्यावाचस्पति छात्रा, उद्यान विज्ञान विभाग, श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर

रजनीगंधा एक बहुपयोगी पुष्प है और इसी कारण इसकी व्यावसायिक महत्व है। इसके फूल का रंग सफेद एवं अत्यन्त सुगंधित होता है। फूल के स्पाइक 90.100 सेंमी लम्बी होते है तथा प्रत्येक गुच्छे में 15.20 जोड़े तक फूल होते है।

उपयोग

- पुष्प सज्जा के लिए डंठलयुक्त पुष्प गुलदस्ता बनाने में उपयोग होता है।
- पुष्प की माला गजरा, लड़ी एवं वेनी बनाने के लिए उपयोग होता है।
- फूल से सुगंधित तेल निकाला जाता है।

किस्म:

फूल के आकार प्रकार तथा संरचना एवं पत्ती के रंग के अनुसार रजनीगंधा की किस्मों को विभाजित किया जाता है।

1 सिंगल: इस वर्ग के फूल में पंखुडियाँ केवल एक ही पंक्ति में होती है। किस्म श्रृंगार, प्रज्जवल, अर्का निरंन्तरा इत्यादि।

2 डबल: इसकी पंखुड़ियों का उपरी शिरा हल्का गुलाबी रंगयुक्त होता है। पंखुड़ियाँ कई पंक्ति में सजी होती है जिससे फूल का केन्द्र विन्दु दिखाई नहीं देता है। किस्म सुवासिनी, वैभव इत्यादि।

3 अर्द्ध डबल: इस वर्ग के फूल में पंखुड़ियाँ एक से अधिक पंक्ति में होती हैं, परन्तु फूल का केन्द्र विन्दु दिखाई देता है। किस्म लोकल

खेत की तैयारी:

रजनीगंधा की खेती के लिए बलुई दोमट, दोमट या मटियार दोमट मिट्टी उपयुक्त होते है। खेत का चुनाव करने के बाद उसे समतल कर लें फिर एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से तथा 2.3 बार देसी हल से जुताई करके पाटा चलाकर मिट्टी को भूरभूरा बना लें। चूँकि यह कन्द वाली फसल है इसलिए कन्द के समुचित विकास हेतु खेत की तैयारी ठीक ढंग से होनी चाहिए।

कन्द की रोपाई:

कन्द रोपने का उपयुक्त समय मार्च.अप्रैल होता हैं। 2 से 2ण्5 सेमी व्यास या इससे बड़े आकार वाले कन्द का चुनाव रोपने के लिए करना चाहिए। सिंगल किस्मों के कन्दों को 15.20 सेमी पौधे से पौधे तथा 20.30 सेमी लाईन से लाईन की दूरी पर जबकि डबल किस्म को 20.25 सेमी पौधे से पौधे की दूरी एवं 20.30 सेमी लाईन से लाईन की दूरी तथा 5 सेमी की गहराई पर रोपना चाहिए ।

खाद एवं उर्वरक:

एक वर्ग मीटर की क्यारी में 3.3ण्5 किग्रा सड़ा हुआ कम्पोस्ट, 20.30 ग्राम नाईट्रोजन, 15.20 ग्राम फॉस्फोरस तथा 10.20 ग्राम पोटाश देना लाभदायक होता है। नाईट्रोजन तीन बार में बराबर मात्रा में देना चाहिए। एक भाग रोपने के पहले एवं दूसरा भाग 60 दिन के बाद 3.4 पत्ती होने पर तथा तीसरी मात्रा फूल निकलने पर देनी चाहिए। कम्पोस्ट फॉस्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा को कन्द रोपने के पहले ही व्यवहार करना चाहिए।

सिचाई:

गर्मी में एक सप्ताह के अन्तराल पर सिंचाई करनी चाहिए। बरसात में वर्षा नहीं होने पर तथा अन्य मौसम में नमी को देखते हुए आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए।

उपज:

इसकी खेती करने से सिंगल किस्म में लगभग दो लाख डंठल पुष्प प्रति हेक्टेयर एवं डबल किस्म में तीन लाख डंठल पुष्प प्राप्त किये जा सकते हैं। इसकी खेती से लागत मूल्य का तीन गुणा अधिक लाभ प्राप्त हो सकता है जबकि सुगंधित द्रव्य के रूप में कंकरीट 27ण्5 किग्रा प्रति हेक्टयर तक प्राप्त किया जा सकता है।

कीड़े एवं बिमारियाँ:

इस फूल में फफूंद की बीमारी लीफ स्पॉट लगती है। इससे बचाव के लिए साफ फफूँदनाशक का छिड़काव 2.2ण्5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर करे। कीड़े में मुख्य रूप से थ्रिप्स तथा माईट का आक्रमण होता हैए जो कि पत्ती तथा फूल दोनों को बुरी तरह प्रभावित करते हैं। थ्रिप्स से फसल की रक्षा हेतु इमीडाक्लोरोपिड एक मीली प्रति लीटर पानी की दर से का छिड़काव 10–15 दिन के अन्तराल पर करना चाहिए। माइट के लिए डाइकोल 0.2 प्रतिशत की दर से छिड़काव लाभकारी होता है।